IJAER/ March-April 2023/Volume-12/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

बाल साहित्य में पर्यावरणीय एवं नैतिक मूल्यों का अध्ययन

डॉ. रजनीश शर्मा, Superwiser
अधिष्ठाता, कला एवं मानविकी संकाय
संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा

मुन्नालाल, Research Scholar
शिक्षा विभाग
संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा

साहित्य वास्तव में उच्च मानवीय चिन्तन का श्रेष्ठ दर्षन है। जो विचार हितकारी और आनन्द का स्वरूप है। साहित्य में हित सर्वोपरि है,जो अपने विचारों को श्रेष्ठत्व प्रदान करता है। ”बालको की रूचियों , कल्पनाओं , बौद्धिक क्षमताओं उनकी सूझ–बूझ, उनका परिवेष, उनकी मानसिकता आदि को केन्द्र में रखकर लिखा गया साहित्य ‘ बाल–साहित्य’ माना जाता है। “ वह सभी कुछ जो हम अपनें चारो ओर देखते है, जिनके साथ अन्तः क्रिया करते हैं तथा जिन पर हमारा तथा अन्य जींवो का जीवन निर्भर करता है, पर्यावरण कहलाता है। बचपन और कहानियों का एक अलग ही नाता है। यह कहानियां ही तो है, जो जिंदगी की छोटी से छोटी सीख बड़े ही सहज और सरल तरीके से दे जाती है और इसी सीख पर निर्भर करता हैं बच्चों का व्यक्तित्व। आज भले ही दिल बहलाने वाली बच्चों की नैतिक कहानियां हमारे जहन से धुंधली हो गई हो, लेकिन उनसे मिली सीख यकीनन आज भी आप सभी के दिलों में जिंदा होगी। वही आज के दौर की बात करे , तो हम बच्चों को बहलाने के लिये उनके हाथ में टी.वी. का रिमोट या मोबाइल थमा देते है और इस बात को भूल जाते है कि बच्चों को बहलाने से कहीं ज्यादा जरूरी है उन्हे नैतिकता का पाठ पढाना है। अगर याद हो तो हमारे बुजुर्गो ने हमें नैतिकता का पाठ नैतिक कहानी के माध्यम से सिखाया था। ये इन कहानियों का जादू ही है जो बच्चों को जीवन भर भूलने नहीं देगा कि जिदंगी में नैतिक मूल्यों का होना कितना जरूरी है.....।

मुख्य शब्दरू *बाल साहित्यए नैतिक मूल्यों*

प्रस्तावना

‘साहित्स्य भावः इति साहित्यम्’ अर्थात जिसमें हित की भावना निहित हो वही साहित्य है। साहित्य मनुष्य के भावों विचारों , घटनाओं ,अनुभवों के सहित भाव के साथ प्रस्तुती है। साहित्य शब्द का अर्थ :– ‘ साथ–साथ संग युक्त। ’साहित्य से समस्त जीवन की अभिव्यक्ति और संपूर्ण ज्ञान की चेतना का बोद्ध होता है। साहित्य मनुष्य की जिज्ञासावृति को षांत करता है। बाल साहित्य दो शब्दों से मिलकर बना है– बाल + साहित्य अर्थात जो बाल साहित्य बालकों के लिये लिखा जाता है। यह बच्चों के मनोरंजन , ज्ञानवर्द्धन, जिज्ञासावृति, मानसिक विकास, व्यक्तित्व विकास एवं प्रेरणाप्रद सामाजिक विकास के लिये लिखा जाता है। आचार्य श्याम सुन्दर दास के अनुसार ”सामाजिक मस्तिष्क अपने पोषण के लिये जो भाव सामग्री निकालकर समाज को सौपता है, उसी के संचित भंडार का नाम साहित्य है।“आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार : ” ज्ञान राषि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है।“

साहित्य को समाज का दर्पण कहते है, क्यों की जिस प्रकार हम दर्पण में अपना प्रतिबिंब देखते है, उसी प्रकार साहित्य रूपी दर्पण में समाज के यथार्थ का प्रतिबिंब दिखाई देता है। इस प्रकार साहित्य वास्तव में उच्च मानवीय चिन्तन का श्रेष्ठ दर्षन है। जो विचार हितकारी और आनन्द का स्वरूप है। साहित्य में हित सर्वोपरि है,जो अपने विचारों को श्रेष्ठत्व प्रदान करता है। "बालको की रूचियों , कल्पनाओं , बौद्धिक क्षमताओं उनकी सूझ–बूझ, उनका परिवेष, उनकी मानसिकता आदि को केन्द्र में रखकर लिखा गया साहित्य ' बाल–साहित्य' माना जाता है। "

पंचतंत्र में विष्णु शर्मा ने कहा है – " जिस प्रकार किसी नये पात्र का कोई संस्कार नहीं रहता ठीक उसी प्रकार बालकों की स्थिति होती है। इसलिये उन्हे कथाओं के माध्यम से ही संस्कार बताना चाहिए। नीति कथाओं से परिपूर्ण बालकों की जिज्ञासा को शान्त करने वाला साहित्य ही बाल–साहित्य है।

हेनरी स्टील – " बच्चों ने जिसे अपना लिया वहीं बाल– साहित्य है। "

हार्वे डार्टन – " बाल – साहित्य से मेरा अभिप्राय उन प्रकाषनों से है, जिनका उद्देष्य बच्चों को सहज रीति से अथवा सुधारना अथवा उन्हें उपयोगी रीति से शांत बनाये रखना।

बाल साहित्य :साहित्य समाज का दर्पण होता है। प्रत्येक साहित्यिक विद्या तत्कालीन परिस्थितियों की उपज होती है। हिन्दी साहित्य का क्षेत्र विस्तृत और विविधता पूर्ण है। जो समाज के अनेक रूपो को परोसता आ रहा है बाल साहित्य भी कोई विषय नहीं है बाल साहित्य हमारे यहां मौखिक रूप से सदियों से रहा है। दादी–नानी तरह तरह की कहानियां सुनाती थी।बाल साहित्य का जन्म उसी कहानी की कोख से हुआ है। पंचतंत्र और हितोपदेष की कहानी , सिंहासन बत्तीसी और वैताल पच्चीसी की कहानी भी बच्चों के बीच आने लगी, जातक कथाएं भी इसी के अन्तर्गत है। बाल साहित्य की लिखित परम्परा में अमीर खुसरों से इसकी शुरूआत मानी जा सकती लें बाल साहित्य का उद्देष्य मनोरंजन के साथ साथ बच्चों को भावी जीवन संघर्ष के लिये तैयार करना तथा जीवन की वास्तविकता को स्वीकार करने के साथ ही एक स्वस्थ और सबल दृष्टिकोण प्रदान करना होता है। बाल साहित्य की अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल होनी चाहिए।

समाज के बालक वर्ग को ध्यान में रखकर जिस साहित्य विषेष की रचना की जाती है, वह बाल साहित्य कहलाता है। इस वर्ग विषेष के अन्तर्गत मुख्यतः बारह वर्ष तक के बच्चों की गणना की जाती है। अतः साहित्यकार को अपनी बुद्धि के उच्चस्थल का त्याग करके एक बालक की मनः स्थिति के धरातल पर उतरकर साहित्य की रचना करता है।

बाल साहित्य ही वह सामग्री है जिसकी सहायता से बच्वें की मौखिक भाषा शैली संवर सकती है। बच्चों में संवाद अदायगी का विस्तार हो सकता है। प्रष्न करने और खुद उत्तर देने की क्षमता का विकास हो सकता है। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चें कल्पना लोक में जाते है। वे निष्कर्ष और विष्लेषण करना सीखते है।

बाल साहित्य की पुस्तकों के चित्रों को देखकर पुस्तकें पढने का प्रयास करने लगते है।बाल साहित्य की पुस्तकें पढनें से बच्चों में सजकता, आत्मविष्वास, सृजनषीलता बढाती है। अच्छे–बुरे की समझ विकसित होती है। बाल– साहित्य के माध्यम से बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है। भाग्यवाद

से उन्हे दूर किया जा सकता है। पाठ्यपुस्तकों से हटकर बाल साहित्य उनमें कल्पना जगाने का धारदार हथियार है।

बाल साहित्य में आयु के अनुरूप रचना सामग्री होती है। बहरहाल पाँच साल तक के बच्चों की खासियतों को ध्यान में रखते हुये हम बाल साहित्य पर विमर्ष करते है।बच्चों के लिये लिखा गया साहित्य ही बाल साहित्य है।लेकिन उसका अर्थ यह नहीं की उस साहित्य में बच्चों की दुनिया शामिल ही नहीं की जाये। सबसे पहली और अनिवार्य शर्त यहीं है कि वह जो कुछ भी सुने उसमें खुद को शामिल करने की कल्पना करे। बाल साहित्य कहीं न कहीं मनोरंजन करता हुआ उसें कल्पना की दुनिया की सैर कराता हुआ अप्रत्यक्ष रूप से उसे सामाजिक प्राणी के रूप में संस्कारित करने वाला अवष्य हो।

बाल साहित्य छोटी उम्र के बच्चों को ध्यान में रखकर लिया गया साहित्य होता है। बाल साहित्य लेखन की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। नारायण पंडित ने पंचतंत्र नामक पुस्तक में कहानियों में पशु पक्षियों को माध्यम बनाकर बच्चों को षिक्षा प्रदान की। कहानियों को सुनना तो बच्चों की सबसे प्यारी आदत है। कहानियों के माध्यम से ही हम बच्चों को षिक्षा प्रदान करते है। बच्चपन्न में हमारी दादी–नानी , हमारी मां ही हमें कहानियां सुनाती थी। कहानियां सुनाते सुनाते कभी तों वो हमें परियों के देष ले जाती थी तो कभी सत्य जैसी यथार्थ वादी बातें सीखा जाती थी। साहस, बलिदान,त्याग और परिश्रम ऐसे गुण है जिनके आधार पर व्यक्ति आगे बढता है और ये सब गुण हमें अपनी मां के हाथों ही मिलते है। दरअसल, बाल साहित्य का उद्देष्य बाल पाठको का मनोरंजन करना ही नहीं अपितु उन्हें आज के जीवन की सच्चाईयों से परिचित कराना है।आज के बालक कल के भारत के नागरिक है। वे जैसा पढेगें उसी के अनुरूप उनका चरित्र निमार्ण होगा। कहानियों के माध्यम से हम बच्चों को षिक्षा प्रदान करके उनका चरित्र निमार्ण कर सकते है तभी तो ये बच्चें जीवन के संघर्षो का सामना कर सकेगें।

बच्चों का मन मक्खन की तरह निर्मल होता है, कहानियों और कविताओं के माध्यम से हम उनके मन को वह शक्ति प्रदान कर सकते है जों उनके मन के भीतर जाकर संस्कार ,समर्पण,सद्भावना और भारतीय संस्कृति का विकास कर सकते है।बच्चे राष्ट्र का भविष्य होते हैं आज के नौनिहाल कल के नागरिक है। बालसाहित्य बाल मनोविज्ञान का ही परिणाम है। यदि बाल मनोविज्ञान न होता तो बाल साहित्य का जन्म नहीं होता। मनोवैज्ञानिको का विचार है कि पुस्तकों से बच्चों का विकास अधिक तीव्रता से होता है इसलिए बच्चों की पढनें की रूचि का विकास भी बहुत आवष्यक है।पढना केवल बौद्धिक अनुभव नहीं है उसके द्वारा भावनात्मक अनुभवो की भी प्राप्ति होती है। पढने से हास्य,रूचि, प्रसन्नता, उत्साह और महत्त्वाकांक्षा का विकास होता है। बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है और बौद्धिक ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जीवन जीने की कला और उसके उद्देष्यों को प्राप्त करना ही मानव का कर्त्तव्य होता है किन्तु यदि वह जीवन व्यवहार की कला नहीं जानता तो उसे सफलता नहीं मिलेगी। बच्चें को जन्म देना ही पर्याप्त नहीं है उसके जीवन को दिषा देना उसे सहीं राह दिखाना भी उतना ही आवष्यक होता है।

बाल्यावस्था को भावी जीवन का मूलाधार मानते हुये वड्र्सवर्थ ने बच्चें को मनुष्य का पिता कहा है। मनुष्य के इस पिता के लिये लेखन करने हेतु मानक सिद्धान्त प्रतिपादित करते हुये उनका तात्विक विवेचन करना निःसंदेह दुष्कर है क्यों कि बच्चा मन का राजा होता है और उसके मन को बिना जाने टटोले किया गया

लेखन उसके मन माफिक कतई नहीं हो सकता। बालक की मनोदषा उसकी आजादी,उसकी किलकारी, उसके सपनें , उसकी हलचलें सब बाल साहित्य की मूल्यवान सम्पदा है। प्रेमचन्द ने लिखा है कि " बुढापा बहुधा बच्चपन का पुनरागमन हुआ करता है।" बालसाहित्य के स्वरूप का निरूपण करते हुये महीयसी महादेवी वर्मा ने एक सार्थक टिप्पणी की थी कि "वैसे वह स्वयं एक काव्य है स्वयं ही साहित्य है हम उस साहित्य को एक दिषा देते है, सिमाएं बांधते है और इसे बाल साहित्य कहते है।"

बच्चों को मस्ती, खेल, छोटी–छोटी गतिविधियां , रहस्य रोमांच, आधारित कहांनिया सुना सुनाकर बच्चों में धैर्य , समझ लगन और अपनी राय बनाने के योग्य बनाने की कसरत की जानी चाहिए। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों के बीच हम उसके घर और परिवेष में जो भिन्नता नजर आती है, उसे कम कर सकते है। बाल साहित्य ही है जो बच्चों को पाठ्यपुस्तक से बच्चों को खेल खेल में बहुत सारी अवधारणाओं के प्रति समझ बढपाने में सहायक होता है।

पर्यावरण : वह सभी कुछ जो हम अपनें चारो ओर देखते है, जिनके साथ अन्तः क्रिया करते हैं तथा जिन पर हमारा तथा अन्य जींवो का जीवन निर्भर करता है, पर्यावरण कहलाता है।

उद्देश्य

1 बाल साहित्य में प्रकाषित होने वाली सामग्री का विष्लेषण करना।

2 पर्यावरणीय मूल्यों के सन्दर्भ में बाल साहित्य का विष्लेषण करना।

मानव पर्यावरण अन्तः क्रिया : जीवित रहनें के लिये हम सांस लेते है, सांस लेने के लिये यह वायु कहां से मिलती है' जीवित रहने के लिये भोजन की आवष्यकता होती है, यही भोजन कहां से प्राप्त होता है। जीवित रहने के लिये हम पानी पीते हैं। यह पानी कहां से आता है,सुरक्षित जीवन यापन के लिये हम मकान बनाते है,उसमें रहते है, मकान बनाने के लिये किन किन चीजों की आवष्यकता होती है। यह चीजें कहां से प्राप्त होती हैं। पेडों से हमें क्या मिलता हैं , फसलों का उत्पादन कैसे बढाया जा सकता है। उसके लिये स्रोत कहां से मिलते है।बारिस क्यों होती हैं। उसका संतुलन क्यों बिगड रहा है। पालतु जानवर कौन से है। सभी चीजों को पृथ्वी खींचती है। ऐसा क्यों मकान बनाने के लिये हमें किन किन व्यक्तियों से मदद लेनी पडती है। हम विभिन्न वस्तुओं का उपयोग करते है जैसं– टेबल, कुर्सी, पलंग, बर्तन इत्यादि। ये वस्तुए किन पदार्थो से बनती हैं और कहां से आती है। मकान में रहने वाले सदस्य मिलकर एक परिवार बनातें हैं। इनमें आपस में क्या रिस्तें होते हैं।

परिवार के सदस्य मिलकर उत्सव मनातें है। क्या ये उत्सव उनकी खुषियों अथवा दुःख बांटनें का तरीका है। क्या उत्सवों के द्वारा वे संवेदना के स्तर पर एक दूसरे से जुडते हैं। यह सब मानव के भौतिक व प्राकृतिक पर्यावरण के साथ अंतः क्रिया के हिस्से हैं।. इसके अलावा हमारी अन्तःक्रिया हमारे समाज से होती है।

क्या हम अनय मानवों के न होने पर अकेले पड जायेंगे। अपना जीवन चला पायेंगे।इसी अंतःनिर्भरता को पहचानना व उसके विभिन्न पहलुओं का अध्ययन हम पर्यावरण अध्ययन में करते है। इसी प्रार वह स्थान

जहां हम रहते है। जो कार्य हम करते है। जो भाजन हम खाते हैं। हमारे सामाजिक रीति रिवाज और संस्कुति, हमारा लोक साहित्य सामाजिक संस्थाऐं आदि सभी पर्यावरण के अंग है। प्रतिदिन हमारी इनसे अन्तः क्रिया होती है और इस अन्तः क्रिया के परिणाम स्वरूप हमारे अनुभवों में वृद्धि होती है। इस प्रकार प्राप्त अनुभव पर्यावरण की समान अथवा अलग परिस्थितियों से निपटने में हमारी सहायता करते हैं। अतः कहां जा सकता है कि मानव अपने और पर्यावरण के बीच होने वाली अंतःक्रिया की उपज है।

पर्यावरण के बारें मे बच्चें की समझ : बच्चें अपने पर्यावरण के बारें में क्या क्या जानते है। बच्चों में किस प्रकार की क्षमताएं होती है। वे क्या क्या कर सकते है। वे जिस परिवेष में रहते है, उसके बारे में कितना और कैसे जानते है। दो साल की बच्ची कुत्ते और बकरी को पहचानने में भ्रमित नहीं होती हैं। वह अपने आस–पास की चींजो को पहचान लेती है। वह अपने रिस्तेदारों को पहचान लेती है। बच्चीं अपने आस पास की चीजों और घटनाओं को बहुत गौर से देखती है। वह उन चीजों के गुणों की परख ककरती हैं। एक चीज का दूसरी से तुलना करती है और उसमें समानता तथा फर्क खोजने का प्रयास करती है बच्चें खुद नई नई चीजों को खोजने में जुटे रहते हैं और आनन्द लेते है। बच्चों के अपने कई सारे खेल और सपनें होते है। जिनके माध्यम से वह सीखतें रहते हैं।इस सीखने की प्रक्रिया में उनके मन में तरीके और विधियों के नियम बनते रहते है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। इस प्रकार बच्ची अपनें स्तर पर अवधारणाएं बनाती रहती है और उनमें परिवर्तन करती रहती है। ऐसी बहुत सी समझ 6–7 साल की बच्ची के पास होती है।

बच्ची जब कक्षा में आती है तो वह अपने खुद के प्रयास से रचे गये ज्ञान को लेकर आती है। हमें यह समझने की आवष्यकता है कि आखिर उसके पास जो ज्ञान है वह क्या–क्या है और उसका हम कैसे उपयोग करें। हमें यह भी सोचना होगा कि यह ज्ञान उसनें कैसे अर्जित किया है ताकि उस तरीके का कुछ काम शाला में भी कर सकें। हमें यह भी समझना होगा किउसाकर विष्वदर्षन और वह अपने परिवेष की चीजों को किस नजरिय से देखती है। हमें यह भी देखना होगा क्या यह सब हर बच्ची के लिये एक सा होता है।या उनकी पृष्ठभूमि का भी कोई असर होता है। आपकी कक्षा में आने वाले बच्चें भी अलग–अलग पृष्ठभूमि के होंगे। हमें इस विविधता के बारें में सोचना है और उसके कक्षा में उपयोग के बारे में भी।यह भी स्पष्ट है कि इस विविधता के साथ साथ उनमें बहुत सी समानताएं होंगी जैसे उन बच्चों में सीखने की अगाध क्षमताएं होती है। अलग–अलग पृष्ठभूमि के बच्चों के अपने अपने अनुभव तो होंगे ही पर अनुभव व क्षमताऐं समान भी होंगी। यह स्पष्ट की बच्चें सांस्कृतिक ,र्प्यावरणीय अनुभवों और मान्यताओं के साथ बहुत कुछ और लेकर कक्षा में आतें है।

जो उनकी संस्कृति का हिस्सा है। यह उनके अनुभवों को उजागर करने का प्रमुख औजार है। हम पर्यावरण में मौजूद हर चींज को सीखनें की सामग्री के रूप में इस्तेमाल करना चाहते है। इस दृष्टि से हमें यह समझना होगा कि आखिर बच्चें की दुनिया कैसी है। यह ज्ञान कैसे अर्जित करता है। उसकी क्षमताएं क्या–क्या है। उसकी सीमाएं क्या है। सीखनें में व्यस्क व समाज की भूमिका क्या होती है।

बाल साहित्य में नैतिक मूल्य : बचपन और कहानियों का एक अलग ही नाता है। यह कहानियां ही तो है, जो जिंदगी की छोटी से छोटी सीख बडे ही सहज और सरल तरीके से दे जाती है और इसी सीख पर

निर्भर करता हैं बच्चों का व्यक्तित्व। आज भले ही दिल बहलाने वाली बच्चों की नैतिक कहानियां हमारे जहन से धुंधली हो गई हो, लेकिन उनसे मिली सीख यकीनन आज भी आप सभी के दिलों में जिंदा होगी। वही आज के दौर की बात करे , तो हम बच्चों को बहलाने के लिये उनके हाथ में टी.वी. का रिमोट या मोबाइल थमा देते है और इस बात को भूल जाते है कि बच्चों को बहलाने से कहीं ज्यादा जरूरी है उन्हे नैतिकता का पाठ पढाना है। अगर याद हो तो हमारे बुजुर्गो ने हमें नैतिकता का पाठ नैतिक कहानी के माध्यम से सिखाया था। ये इन कहानियों का जादू ही है जो बच्चों को जीवन भर भूलने नहीं देगा कि जिदंगी में नैतिक मूल्यों का होना कितना जरूरी है.....।

नैतिक षिक्षाप्रद कहानियाँ :–

खुषी के पिछे मत भागो, अपने जीवन का आनन्द लो , षिक्षाः खुषी के पिछे मत भागो, अपने जीवन का आनन्द लो।

एक बुद्धिमान व्यक्ति : षिक्षा : चिंता करने आपकी समस्याओं का समाधान नहीं होगा, यह सिर्फ आपका समय और ऊर्जा बर्बाद करेगा।

मूर्ख गद्या : षिक्षा : किस्मत हमेषा साथ नहीं देती।

एक सच्चा दौस्त : षिक्षा : अपने जीवन में फालतू चींजो को महत्व न दे केवल अच्छी चीजों को महत्व देना सीखे।

दो दोस्त और एक भालू : षिक्षा : मित्र वहीं जो मुसीबत में काम आये।

अंगूर खट्टे है : षिक्षा : आप जो नहीं पा सकते है उसकी बुराई ही करते है।

सोने का अंडा : षिक्षा : हर कार्य को करने पहले अच्छी तरह सोचना चाहिए।

चार गाय और एक शेर : षिक्षा : एकता में बल है।

जीवन की कठिन परिस्थितियाँ : षिक्षा : जीवन में चीजे हमारे आस–पास होती हैं,चीजें हमारे साथ होती हैं, लेकिन केवल एक चीज जो वास्तव में मायने रखती है वह यह है कि आप इस पर प्रतिक्रियां कैसे करते हैं और आप इससे क्या बनाते है। जीवन सभी दषाओं को अपनाने और संघर्षो को परिवर्तित करने के बारें में हैं जो हम कुछ सकारात्मक अनुभव करते है।

किसान और कुआँ : षिक्षा : धोखे से आपको कुछ नहीं मिलेगा। यदि आप धोखा देते है, तो आप इसके लिये जल्द हीं भूगतान करेंगे।

सच्चाई , ईमानदारी, प्रेम, दयालुता, मैत्री आदि को नैतिक मूल्य कहा जाता है। सच्चाई को स्वतः साध्य मूल्य कहां जाता है। यह अपने आप में ही मूल्य परक है। इसका प्रयोग साधन की भांति नहीं किया जाता, बल्कि यह स्वतः साध्य है। सभी विवादो में भी सत्य के अन्वेषण का प्रयास किया जाता है। सभी नैतिक

मूल्यों का नैतिक आधार सत्य है। सत्य एक व्यापक दार्षनिक अवधारणा है लेकिन संक्षेप में इसे वस्तुस्थिति को ज्यों का त्यों कहना कहा जाता है। अर्थत बिना किसी पूर्वाग्रह के किसी वस्तुस्थिति को देखना,समझना और व्यक्त करने को ही सच्चाई कहते है।

मनुष्य में दयालुता नामक सद्गुण भी विद्यमान होता है। मनुष्य में अन्यों के प्रति दयालुता का भाव होता है। प्रायः वे अन्यों को कठिनाई में देखते हुये उनकी सहायता का प्रयास करते हैं क्यों कि मनुष्य यह स्वीकार करता है कि इस प्रकार की समस्याएं व घटनाएं किसी के साथ भी हो सकती है इसलिए मनुष्य दयालुता के बोध के कारण ही एक दूसरे की सहायता का प्रयास करते है।

प्राचीन भारत में "वसुधैव कुटुम्बकम " की अवधारणा पाई जाती हैं जिसका अभिप्राय है कि सम्पूर्ण धरती एक परिवार है और यहा सभी को एक दूसरे के साथ परस्पर प्रेमपूर्वक रहना चाहिए।

निष्कर्ष

बाल साहित्य दो शब्दों से मिलकर बना है– बाल + साहित्य अर्थात जो बाल साहित्य बालकों के लिये लिखा जाता है। यह बच्चों के मनोरंजन , ज्ञानवर्द्धन, जिज्ञासावृति, मानसिक विकास, व्यक्तित्व विकास एवं प्रेरणाप्रद सामाजिक विकास के लिये लिखा जाता है। आचार्य श्याम सुन्दर दास के अनुसार "सामाजिक मस्तिष्क अपने पोषण के लिये जो भाव सामग्री निकालकर समाज को सौपता है, उसी के संचित भंडार का नाम साहित्य है।" बाल्यावस्था को भावी जीवन का मूलाधार मानते हुये वड्र्सवर्थ ने बच्चें को मनुष्य का पिता कहा है। मनुष्य के इस पिता के लिये लेखन करने हेतु मानक सिद्धान्त प्रतिपादित करते हुये उनका तात्विक विवेचन करना निःसंदेह दुष्कर है क्यों कि बच्चा मन का राजा होता है और उसके मन को बिना जाने टटोले किया गया लेखन उसके मन माफिक कतई नहीं हो सकता। बालक की मनोदषा उसकी आजादी,उसकी किलकारी, उसके सपनें , उसकी हलचलें सब बाल साहित्य की मूल्यवान सम्पदा है। प्रेमचन्द ने लिखा है कि " बुढापा बहुधा बच्चपन का पुनरागमन हुआ करता है।"

✸✸

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- भरतचन्द्र शर्मा : बच्चों की फुलवारी

2- मुकेष 'नादान' : मोगली के कारनामे

3- रमन कुमार : पिनोकियो तथा अन्य कहानियाँ

4- मुकेष 'नादान : सिंहासन बतीसी

5- हर्षिता : सिंदबाद की समुद्री यात्राएँ

6- मुकेष 'नादान : पौराणिक बाल कथाऍं

7- संदीप सुषील : शेखचिल्ली के किस्से

8- स्निग्धा कुमारी : चंदामामा की कहानियाँ

9- नीलकंठ कुंदन : जंगल की कहानियॅा

10- विभोर कुमार : रोमांचकारी कहानियाँ

11- लेव टालस्टाय : बच्चों सुनो कहानी

12- श्री हरिदास वैद्य : गुलिस्तां

13- गोविन्द सिंह 'चन्द्रवंषी' : बच्चों के गुण

***